सफेद फूल

जैसा की आज का रिवाज है मेरे बच्चे कई बार हमे दुनियाँ की नई नई बाते बताकर यह जताने की कोशिश करते हैं कि उनका जनरल नॉलेज हमसे कितना अच्छा है। लेकिन जब वैसा मौका आता है, तो हम भी कहॉ चूकने वाले हैं? हमारे पास भी ऐसी धाकड बाते हैं जो उन्हे पीछे छोड सकती है। एक बार ऐसी ही बात चली तो हमने अपने बच्चों से शर्त लगाई कि चलो शुरू हो जाओ और देखें कि फूलों के बारे में कौन कितना जानता है। लिखो लम्बी लिस्ट। लेकिन शर्त है कि केवल सफेद फूलों के नाम लिखने है। और वह भी ऐसे फूल जिनके विषय में तुम्हे कुछ जानकारी है।

अब जाहिर है कि यह शर्त तो मैने ही जीतनी थी। लेकिन इस खेल में सफेद फूलो की जो लम्बी लिस्ट बनी तो मैंने सोचा कि क्यों न तुम सबको भी उनके विषय में बताया जाय।

भारत जैसे गरम देशों मे फूल प्रायः सुगन्धी होते हैं जब कि अमरीका या यूरोप के फूलों में अधिकतर खुशबू नही होती। लेकिन भारतीय फूलों में भी रंगीन फूलो की कई जातियाँ हैं जो गंधहीन हैं जब कि सफेद फूल प्रायः काफी सुगन्धी वाले होते हैं।

सफेद फूलों में सबसे जाने पहचाने हैं बेला, चमेली और जूही जिनकी बडी प्यारी और तेज खूशबू होती है। ये तीनों तेज गर्मी के मौसम में खिलते हैं। शाम को इन्हें पास रख लो तो गरमी की बौखलाहट दूर हो जाती है। बेला का एक फूल रात पानी के घडे में डाल दो, और दूसरे दिन वह पानी पीकर देखों कैसा स्वाद आता है। एक थाली में पानी रखकर उसमें बेला के कुछ फूल डाल दो और रात में उन्हे सिरहाने रखकर सोओ तो ताजगी मिलेगी।

शोख सुगंध वाले फूलों में सबसे आगे है रातरानी। आलपीन को थोडा मोटा कर दो, तो बस उतना ही छोटा सा फूल है। लेकिन सारा पेड इकठ्ठा फूलों से लदकर रात को महकने लगता है। साल में दो या तीन बार इसका सीझन आता है। इसका दूसरा कम्पीटीटर है लम्बी छड वाला रजनीगंधा का फूल जो सर्दियों में जादा खिलता है।

सुबह मुँह अंधेरे में खिलने वाला छोटा सा फूल है हरसिंगार जिसकी डंठल केसरिया होती है। जरा सी धूप में यह मुर्झा जाता है। लेकिन इसकी पंखुडीयों को पानी से जरा सा छुलाकर फूल को थाली में चिपका दो- ताकि डंठल बाहर की ओर रहे। ऐसे कई फूलों से डिझाईन बनाओ और छाँह में रख्खो तो सारा दिन वह डिझाईन वैसा ही बना रहेगा। इसकी डंठल से हल्का केसरिया रंग निचोडकर हमने कई चित्रों में प्रयोग भी किया है। इस डंठल का रंग मूँगे के रंग से इतना मिलता है कि मलयालम भाषा में इसे कहते हैं। का अर्थ है मूँगा

एक बिल्कुल छोटे बटन के आकार का महकीला फूल है मौलसिरी का। इसके फूल चुनकर किताबों के पन्नों में रख दो तो वर्षों तक उनमें से भीनी खूशबू आती रहेगी। हरसिंगार और मौलसिरी के फूल झरकर जमीन पर सुबह यों बिखर जाते हैं जैसे तारे बिखरे पडे हों।

लेकिन मेरा सबसे प्रिय फूल है आकाशनील। छरहरा, सीधा आकाश की दिशा में बढने वाला पेड- जिसकी डालियाँ पेड से ऐसे सटी रहती हैं, जैसे अटेन्शन मुद्रा में हमारे हाथ। फूल वाले पेडों पर देखना हो तो

गर्दन इतनी उँची उठानी पडती है कि दुखने लगे। या फिर इसके पास किसी उँची बिल्डींग पर चढ जाओ। दशहरे से दिवाली तक इसमें फूल खिलते हैं। सारे फूल फुनगियों पर करीब दो इंची लम्बी डंठल से झूलते रहेंगे। दूर से देखो तो एक सुनहरी आभा से चमचम करते हैं। इसलिये पेड की सबसे उपरी फुनगी को तो लगता है किसी ने मुकुट पहना दिया हो। फूल तुम्हे जमीन पर से ही चुनने पडेंगे। पेड पर चढने का सवाल ही नही उठता है। लेकिन किसी उथली थाली में थोडे से पानी में डंठल डुबोकर रखने पर तीन चार दिन तक वेसे ही ताजा और खुशबूदार रहेंगे। इसी पेड के तनेसे cork बनता है। तो एक टिप है... सीधे ऊपर जाने वाला अशोक और आकाशनील के पेडो को एक के बाद एक के क्रम से लगाओ। फिर देखना उस रास्ते की या कम्पाउंड की शोभा। या फिर तुम्हे भाषाविद् बनना है तो देखों भाषा का कमाल.... इस पेड का कन्नड नाम है गगनमल्लिका, मराठी नाम है गगनजाई, हिन्दी नाम है अकाशनील और बंगाली नाम.....।